अभी कुछ वर्षो से यहाँ शिवरात्रि तथा हाटकेश्वर जयन्ती पर रूद्राभिषेक करा कर इन पर्वो को विशेष रूप से मनाया जाता है तथा हाटकेश्वर जयन्ती पर विशेष रूप से सामूहिक भोजन की व्यवस्था भी की जाने लगी है जिसमें सभी परिवार एकत्र होकर अपने ही हाथ से भोजन बनाते हैं। यह एक अच्छा कार्यक्रम है।

8. वर्तमान कार्यकारिणी:-

पुरानी कार्यकारिणी का कार्य काल समाप्त होने से श्री हरिशंकरजी दशोरा के संयोजन में एक कार्यकारी समिति का निर्माण किया गया जिन्होंने नये चुनाव करवाये जिसमें निम्न पदाधिकारियों का निर्विरोध चयन हुआ जिससे इस कार्यकारिणी ने दिनांक 19.5.2001 को कार्यभार संभाला।

1. अध्यक्ष	–	डा. राधेश्याम दशोरा
2. उपाध्यक्ष	–	सुश्री हंसा दशोरा
3. प्रधानमंत्री	–	श्री राजेन्द्र प्रसाद दशोरा
4. सहमंत्री	–	श्री लक्ष्मी कान्त दशोरा
5. सांस्कृतिक मंत्री	–	श्री उमेश कुमार दशोरा
6. कोषाध्यक्ष	–	श्री दुर्गाशंकर दशोरा

यह कार्य कारिणी वर्तमान में कार्य कर रही है।

7. संशोधित विधान :-

इस वर्तमान कार्यकारिणी ने यह अनुभव किया कि इसका जो पुराना विधान है वह वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल नहीं हैं जिससे इसमें संशोधन की आवश्यकता है। इसके लिए निम्न सदस्यों की एक समिति बनाकर इसमें संशोधन के प्रस्ताव आमंत्रित किये। दिनांक 2.8. 2002 को इसका गठन किया गया।

1.	श्री नन्दलाल दशोरा	संयोजक
2.	श्री हरिशंकर दशोरा	सदस्य
3.	श्री पुरूषोत्तम लाल दशोरा	सदस्य
4.	श्री बृजमोहन दशोरा	सदस्य
5.	डा. परमेन्द्र दशोरा	सदस्य

इस समिति ने अपनी कई बैठकें करके इस विधान का संशोधित प्रारूप प्रस्तावित किया जिसे इस कार्य कारिणी ने उचित संशोधनों के साथ स्वीकृत किया तथा इसकी प्रतियाँ समाज के सभी सदस्यों में प्रसारित की गई तथा किसी की कोई आपत्ति न आने से इसे सर्व सम्मति से स्वीकृत मान पर हाटकेश्वर जयन्ती दिनांक 4.4.2004 को इसे लागू किया गया।

इस विधान के अनुसार श्री घनश्याम दशोरा, श्री हेमन्त दशोरा तथा श्री दिनेश चन्द्र दशोरा को मनोनीत सदस्य तथा श्री जमना लाल दशोरा श्री रमेश चन्द्र दशोरा तथा श्री बृजमोहन दशोरा को संरक्षक नियुक्त किया गया।

10. फण्ड:-

पंचायती नोहरे के रखरखाव तथा हाटकेश्वर मंदिर की पूजा व्यवस्था के लिए इस समाज का एक फण्ड है जिससे दशोरा जाति वालों से नोहरे के उपयोग के लिए नाम मात्र का किराया रख रखाव के नाम से लिया जाता है तथा अन्य जातियों से कुछ अधिक लिया जाता है। साथ ही मंदिर की व्यवस्था के लिए वार्षिक चन्दा लिया जाता है। अन्य कार्यक्रमों तथा नोहरे में कार्य कराने के लिए अलग चन्दा लिया जाता है। इसका सारा हिसाब कोषाध्यक्ष के पास रहता है।

11. अन्य कार्यक्रम :-

इस जाति में पहले खेलों के कार्यक्रम होते थे तथा एक वॉलीबॉल क्लब भी था। कुछ व्यक्ति मिलकर पिकनिक का भी आयोजन करते थे जो बाद में बन्द हो गया। कुछ वर्ष पूर्व इस पिकनिक का फिर से आयोजन किया जाता रहा है जिसमें सीसारमां, नांदेश्वर, अमरख जी, खास ओदी तथा जरगा जी आदि स्थानों पर इसके आयोजन किये गये जो गत दस वर्षों से चल रहा था। गत दो वर्षों में कुछ विशेष परिस्थितियों से यह नहीं हो सका। ये आयोजन काफी सफल रहे तथा सभी ने बड़े उत्साह से इसमें भाग लिया।

कुछ वर्षो से यहां होलिका दहन तथा धुलण्डी पर रंग खेलने का कार्यक्रम भी होता रहा है।

कुछ समय पूर्व यहाँ पंचायती नोहरे में श्री नीलकंठ जी के प्रयत्न से एक पुस्तकालय तथा वाचनालय की भी स्थापना की गई थी जिसमें कई व्यक्तियों ने पुस्तकें व पत्र पत्रिकाएं भेंट की थी। इसका पूरा विधान भी बना लिया था किन्तु कार्यकर्ताओं के अभाव में वह चल नहीं पाया।

स्वर्ण वाक्य

- ❑ विचार का दीप बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। (विनाबा भावे)
- ❑ अगर ऐसा होता, अगर वैसा होता, यह निठल्लों की भाषा है। (अफलातून)
- ❑ नेक बनने में सारी आयु लग जाती है, बदनाम होने में एक दिन भी नहीं लगता। (अज्ञात)
- ❑ आज नहीं, कल, यही आलसियों का गाना है। (अलबर्ट)
- ❑ कायर तभी धमकी देता है जब वह सुरक्षित होता है। (गेटे)